

तीन सवाल

लिओ तोल्सतोय





ISBN 81-237-0976-5

पहला संस्करण : 1994 (शक 1916)

हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1994

Teen Sawal (Hindi)



रु. 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नवसाक्षर साहित्यमाला

तीन सवाल

लिओ तोल्सतोय

अनुवाद

चन्द्रकिरण राठी

चित्र

जगदीश जोशी



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



तीन सवाल

एक था राजा । वह बड़ा समझदार और धुन का पक्का था । वह जो सोचता उसका हल ढूंढकर ही चैन लेता । किसी भी काम में अपनी हार उसे बहुत अखरती । वह सोचता, क्या उपाय किया जाए, जिससे वह कभी न हारे ।

एक दिन उसके मन में तीन सवाल उठे । पहला सवाल था—किसी काम को करने का सही समय कौन सा होता है? दूसरा सवाल था—किसकी बात सुननी चाहिए और किसे टालना चाहिए? और सबसे बड़ा तीसरा सवाल था कि सबसे जरूरी काम कौन सा है?

अपने इन तीन सवालों का जवाब पाने के लिए राजा ने अपने राज्य में डुगडुगी पिटवाई : “जो भी इन तीन सवालों का जवाब देगा उसे इनाम दिया जाएगा।”

डुगडुगी पिटते ही दूर-दूर से लोग राजा के पास आने लगे।

पहले सवाल के जवाब में कुछ लोगों ने कहा—किसी काम को शुरू करने से पहले सोच लेना चाहिए कि काम कितने दिन या महीने में पूरा होगा। फिर काम करने का समय और तरीका नियत करना चाहिए। फिर उसी के अनुसार काम करना चाहिए। सही समय पर काम पूरा करने का यही एक सही तरीका है।

कुछ और लोगों का मानना था कि काम का समय तय करना कठिन है। लेकिन बेकार के कामों में समय न गंवाएं। जो भी आसपास हो रहा हो उस काम में लग जाएं। एक तीसरा दल भी था। उसका कहना था—राजा अकेले हर काम शुरू करने का समय कैसे तय कर सकता है? राजा के पास सलाहकार होने चाहिए। उनकी मदद से राजा तय कर सकता है कि काम कब और कैसे किया जाय।

लेकिन कुछ और लोग भी थे। उनका कहना था—हर काम का समय पहले से सोचना कठिन है। आलस में





समय न बिताएं। जो भी काम सामने हो उसे पूरा कर लें। किसी ने कहा कि कई बार सलाह लेने का समय ही नहीं होता। लेकिन जवाब तुरंत चाहिए। तब सही जवाब केवल जादूगर ही दे सकते हैं। बस, वे जादू से सब कुछ जानकर राजा को बता देंगे।

इसी तरह दूसरे सवाल के भी कई जवाब थे। कुछ लोगों का कहना था—राजा के लिए सलाहकार बहुत जरूरी

होते हैं। कुछ पुजारी और कुछ वैद्य को जरूरी बता रहे थे। किसी ने राजा के लिए सबसे अधिक आवश्यक सैनिकों को माना।

तीसरे सवाल के जवाब भी कई थे। सवाल था—सबसे जरूरी काम कौन सा है? कुछ ने कहा ज्ञान-विज्ञान तो कुछ ने रणनीति। किसी और ने कहा दान-धरम।

सारे जवाब अलग-अलग थे। राजा को एक भी जवाब सही नहीं लगा। राजा ने सुना था कि पास के जंगल में बरसों से एक साधु तप कर रहे हैं। वे केवल साधारण जनों से मिलते हैं। उनके ज्ञान की चर्चा बड़ी दूर-दूर तक थी। अपने सवालों का जवाब पाने के लिए राजा ने मन ही मन उनसे मिलना तय किया।

दूसरे दिन राजा ने राजसी पोशाक उतार कर साधारण कपड़े पहने। कुछ अंगरक्षकों को साथ ले लिया। घोड़े पर सवार होकर राजा जंगल की ओर गया। काफी देर बाद पेड़ों के झुरमुट में उसे साधु की झोपड़ी दिखाई दी। राजा घोड़े से उतर गया। उसने अंगरक्षकों को वहीं खड़े रहने का आदेश दिया। फिर राजा पैदल ही साधु के पास पहुंचा।

राजा ने देखा—साधु बड़ी लगन से झोपड़ी के सामने की जमीन खोद रहे थे। उनका शरीर दुबला-पतला था।



कुदाल से खोदते समय वे जोर-जोर से सांस ले रहे थे। राजा को पास आता देखकर साधु रुक गये। उन्होंने राजा का अभिवादन किया, फिर अपने काम में लग गये।

राजा बोला, “मैं आपके पास अपने कुछ सवालों के जवाब पाने की आशा में आया हूँ। मेरा पहला सवाल है, किसी काम की शुरुआत करने के लिए सही समय कौन सा है? दूसरा, मुझे किन लोगों की जरूरत सबसे ज्यादा है? मुझे किन पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए? और तीसरा, यह कैसे पता लगे कि सबसे अधिक जरूरी काम क्या है? मुझे सबसे पहले क्या करना चाहिए?”

सवाल सुनकर भी साधु ने कोई जवाब नहीं दिया। वे काम में जुटे रहे।

राजा कुछ देर चुपचाप खड़ा देखता रहा। साधु कुदाल चलाते, मिट्टी हटाते और हांफ उठते। यह देख राजा का मन पसीज उठा। वह बोला, “आप कुदाल मुझे दीजिए। कुछ देर मैं खोद दूँ।”

साधु ने चुपचाप कुदाल उसे थमा दी। खुद जमीन पर एक तरफ बैठ गये। एक घंटा हुआ, दूसरा हुआ। राजा खोदता रहा। सूरज पेड़ों के पीछे छुपने लगा। तब कुदाल एक तरफ रखकर राजा साधु से बोला, “मैं आपके पास तीन सवाल लेकर आया हूँ। आपने मेरे सवालों का



जवाब नहीं दिया। यदि आप मेरे एक भी सवाल का जवाब नहीं जानते तो मुझे बताएं। मैं लौट जाऊं।”

इतना सुनकर भी साधु चुप रहे। तभी किसी के दौड़कर आने की आवाज सुनाई दी। साधु ने कहा, “आओ, देखते हैं, कौन आया है?” राजा ने मुड़कर देखा। एक आदमी दौड़ता हुआ वहीं आ रहा था। वह दर्द से कराह रहा था। उसके पेट से खून बहकर उसके पैरों पर गिर रहा था। राजा के पास आकर वह कुछ बुदबुदाया। फिर बेहोश हो गया। राजा और साधु ने मिलकर उसे जमीन पर लिटाया। उसके कपड़े ढीले किये। उसके पेट में बहुत बड़ा घाव था। राजा ने उसका घाव धोकर पट्टी की। पर वह पट्टी खून से भर गयी। राजा ने फिर से खून साफ किया और दूसरी पट्टी बांधी। दो-तीन बार पट्टियां बदलीं। तब कहीं खून बहना बंद हुआ। उस आदमी को होश आया तो उसने पानी मांगा। राजा ने ताजा पानी लाकर उसे पिलाया।

शाम ढल आई थी। हवा ठंडी हो चली थी। बाहर लेटा हुआ आदमी ठंड से कांप उठा। राजा और साधु ने मिलकर उसे झोपड़ी के भीतर सुलाया। वह आंखें बंद किए चुपचाप बिस्तर पर लेटा रहा। यह सब करते-करते राजा बहुत थक गया था। देहरी पर बैठते ही वह गहरी

नींद में सो गया। दूसरे दिन सुबह उसकी आंख खुली। उसे समझ न आया कि वह कहां है? सामने लेटा हुआ बीमार आदमी कौन है? वह उसे एकटक देखता रहा।

धीमी कमजोर आवाज में उस आदमी ने राजा से कहा, “मुझे माफ कर दीजिए।” राजा पहले तो अचकचाया, फिर बोला, “मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम मुझसे माफी क्यों मांग रहे हो?”

“आप मुझे नहीं जानते, मैं आपको जानता हूं। मैं आपका दुश्मन हूं। आपने मेरे भाई को फांसी की सजा सुनाई थी। उसकी संपत्ति जब्त कर ली थी। मैंने तभी बदला लेने की कसम खाई थी। मुझे मालूम हुआ आप साधु के पास अकेले आए हैं। मैंने सोचा था, जब आप वापिस लौटेंगे तब मैं आपकी हत्या कर दूंगा। लेकिन पूरा दिन बीतने पर भी आप नहीं लौटे। तब मैं आपको खोजता हुआ इस तरफ आ रहा था। आपके अंगरक्षकों ने मुझे पहचान लिया। उन्होंने मुझे मारने की कोशिश की। पर मैं बच गया। अगर आपने मेरी मरहम पट्टी न की होती तो मैं मर ही गया होता। आपने मेरी जान बचाई है। अगर मैं जीवित बचा और आपने चाहा तो जीवनभर आपकी सेवा करूंगा। अपने बेटों से भी यही कहूंगा। मुझे क्षमा करें।”



सारी बात सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि शत्रु इतनी आसानी से मित्र बन सकता है। राजा ने उसे माफ कर दिया। उसे विश्वास दिलाया कि लौटकर वह उसकी देखभाल का पूरा इंतजाम करेगा।

राजा झोपड़ी से बाहर आया। साधु के पास जाकर बोला, “मैं अंतिम बार आपसे अपने सवालों का हल मांग रहा हूँ।”

साधु घुटनों के बल बैठे उन क्यारियों में बीज बो रहे थे जिन्हें कल तैयार किया था। साधु ने सिर उठाकर राजा से कहा, “राजन, तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब मिल चुके हैं।”

राजा हैरान हुआ। उसने कहा, “मैं समझा नहीं।”

साधु बोला, “क्या तुम्हें मालूम नहीं? तुम अभी समझे नहीं? अगर कल तुम्हारे मन में मेरे लिए दया न आई होती तो तुम चले गए होते। तुमने ये क्यारियाँ तैयार न की होतीं। राह में यह आदमी तुम पर हमला करता। मेरे पास न रुकने के लिए तुम पछताते।

“जब तुम क्यारियाँ तैयार कर रहे थे, वही सबसे सही समय था। तब सबसे महत्व का आदमी मैं था। उस समय मेरा काम सबसे जरूरी काम था।



“जब वह आदमी दौड़कर हमारे पास आया और हमने उसकी मरहम पट्टी की, वही सबसे सही समय था। अगर तुम उसकी मरहम पट्टी न करते तो वह मर गया होता। इसलिए उस समय वही सबसे महत्व का आदमी

था। तुमने उसके लिए जो भी किया, उस समय वही तुम्हारा सबसे जरूरी काम था।

“हमेशा याद रखना, सबसे सही समय वही होता है जब हमारे पास किसी भी तरह की शक्ति होती है। सबसे महत्व का आदमी वह होता है जिसके साथ हम होते हैं। कोई नहीं जानता कब क्या होगा। सबसे जरूरी काम है, अपने सामने संकट में पड़े आदमी की सहायता करना। इसलिए हमें जीवन मिला है। दूसरों के काम आने में ही जीवन की सफलता है।” इतना कहकर साधु चुप हो गये।

साधु के जवाब सुनकर राजा को संतोष हुआ। राजा ने आदर से उनको प्रणाम किया। फिर उनसे विदा लेकर अपने महल की ओर चल दिया।

